बदलाव लाने के लिए अलग

बदलाव लाने के लिए अलग, भाग 3 – साहस के साथ बोलें (भाग 2)

डॉ. डेविड प्लॉट

हम पाँच कारणों को देख रहे हैं कि हमारी आराधना में परमेश्वर का वचन केन्द्रीय क्यों होना चाहिए। पिछले सप्ताह हमने प्रेरितों के काम 2 में पतरस के प्रचार का प्रयोग करते हुए इस बात का उदाहरण दिया कि कैसे वचन केन्द्रीय था। हमने वचन की भव्यता के बारे में बात की। परमेश्वर के वचन की भव्यता के कारण हमने परमेश्वर के प्रकाशन के महत्व की बात की; इस तथ्य की कि उसने अपने आप को वचन के रूप में प्रकट किया है और उसने अपने आप को वचन के द्वारा प्रकट किया है। हमने मनुष्य द्वारा वचन के प्रचार की गम्भीरता के बारे में बात की। प्रचार की जिम्मेदारी है कि वह परमेश्वर की वाणी को प्रकट करे, अपनी वाणी को नहीं, जिस से परमेश्वर की महानता की प्रशंसा हो सके। हम परमेश्वर की वाणी को ऊँचा करने के द्वारा परमेश्वर को ऊँचा करते हैं।

मैं चाहता हूँ कि हम वहाँ से शुरू करें जहाँ हमने पिछले सप्ताह छोड़ा था और दूसरे कारण को देखें कि हमारी आराधना में परमेश्वर का वचन मुख्य क्यों होना चाहिए। यह कारण वचन के अधिकार के कारण है। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ पद 14 से शुरू करें और प्रचार को फिर से देखें। मैं चाहता हूँ कि आप इस सन्देश में पाए गए अधिकार के बारे में सोचें। पद 14 को देखें। बाइबल कहती हैः

> *14तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा*

हमने इस बारे में बात की कि "ऊँचे शब्द में कहने" का शाब्दिक अर्थ है बहुत महत्व के साथ और गम्भीरतापूर्वक कहना। वह प्रचार शुरू करता है – पहला मसीही प्रचारः

> *हे यहूदियो और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो, और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। 15जैसा तुम समझ रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। 16परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थीः 17परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। 18वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उँडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। 19 और मैं*

ऊपर आकाश में अद्भुत काम और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात् लहू और आग और धूएँ का बादल दिखाऊँगा। 20प्रभु के महान और तेजस्वी दिन के आने से पहले सूर्य अंधेरा और चाँद लहू–सा हो जाएगा। 21और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

अब उसने इन वचनों को योएल से उद्धृत किया। क्या कोई जानता है कि योएल में कहाँ? योएल 2:28–32. या तो हमारे पास बाइबल विद्वान हैं या उनकी बाइबल में टिप्पणी दी गई है जो उन्हें बताती है। योएल 2:28–32– त्वरित बाइबल विद्वान स्थिति। इसलिए वह योएल से उद्धृत करता है। इस प्रचार के पहले भाग में पुराने नियम पर बहुत जोर दिया गया है। फिर हम पद 22 में आते हैं:

22हे इस्राएलियो, ये बातें सुनोः यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो। 23उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। 24परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता। 25क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊँ। 26इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; वरन् मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा। 27क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा। 28तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।

अब वह भजन संहिता में से उद्धृत कर रहा है। कोई जानता है कहाँ से? भजन 16 – आप पकड़ रहे हैं। पद 8–11. वह भजन संहिता में से उद्धृत कर रहा है। पहले हमारे पास योएल था और अब भजन 16 है। वह आगे बढ़ता है:

29हे भाइयो, मैं कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ विद्यमान है। 30वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा; 31उसने होने वाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उसकी देह सड़ने

पाई। 32इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। 33इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। 34क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, 35 जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।

यहाँ पर वह कहाँ से उद्धृत कर रहा है? भजन 110:1. फिर वह एक निष्कर्ष पर आता है:

36*"अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।"*

मैं चाहता हूँ इस प्रथम मसीही प्रचार को पढ़ते समय आप देखें कि यह पुराने नियम के वचन से भरा है। प्रेरितों के काम 2 के इस प्रचार में अधिकार है क्योंकि यह वचन से परिपूर्ण था। आपने प्रचार के केवल आधे वचनों को देखा है जो पुराने नियम के सीधे उद्धरण हैं। पतरस जानता था कि यदि उसे इस विशेष दिन पर खड़े होकर अधिकार के साथ बोलना है तो उसकी जिम्मेदारी है कि वह खड़े होकर परमेश्वर के वचन का प्रयोग करे। यहीं से अधिकार आया था। शुरूआत से ही हम देखते हैं कि सार्वजनिक आराधना में वचन के लिए पूर्व–निर्णय निर्धारित किया गया है कि वह कलीसिया की आराधना को परिपूर्ण करे; वचन से परिपूर्ण होने के लिए क्या होता है जब विश्वासी एक साथ इकट्ठे होते हैं। मैं ने इसका मतलब उस समय समझा जब मैं मेरे एक अच्छे मित्र डॉ. जिम शैडोक के अधीन पढ़ने के लिए सेमिनारी में गया। वे यहाँ प्रचार कर चुके हैं। वे पिछले 6 या 7 वर्षों से मेरे मार्गदर्शक रहे हैं। मुझे याद है प्रचार की कक्षा में उन्होंने कहा, मित्रो हम प्रचारों को देखने वाले हैं और यह कि हम आराधना में परमेश्वर के वचन का कैसे प्रयोग करते हैं और विशेषतः तैराकी के तालाब जैसे प्रचार में। अब उदाहरण को सुनें। उन्होंने कहा, जब प्रचार की बात आती है ऐसे बहुत से लोग हैं जो सोचते हैं कि वचन तैराकी के तख्त के समान है। वे खड़े होते हैं और कुछ वचनों को पढ़ते हैं और फिर बाइबल को बन्द कर देते हैं और शेष समय वे जो चाहते हैं वह बोलते हैं, वचन की ओर वापस नहीं लौटते हैं; स्वयं के विचारों, अपनी स्वयं की धारणाओं को बताते रहते हैं। यह तैराकी का तख्ता है। दूसरा, बहुत से लोग पद को, परमेश्वर के वचन को, तालाब के फर्नीचर के रूप में प्रयोग करते हैं। आप थोड़े–थोड़े अन्तराल में एक से दूसरे किनारे पर तैरते हुए आते हैं, यहाँ से वचन की थोड़ी खुराक लेते हैं, वहाँ से वचन की थोड़ी खुराक लेते हैं, थोड़े अन्तराल में वचन की ओर ईशारा करते हैं परन्तु आप अपने स्वयं के तालाब में मिले हुए समय का आनन्द ले रहे हैं। आप में से

कितनों ने ऐसे प्रचारों को सुना है जहाँ वचन तैराकी का तख्ता है या वचन तालाब का फर्नीचर है, आइए वचन को तालाब के रूप में प्रयोग करें। आइए इस में कूद पड़ें। आइए इस में हम तैरें। आइए उसमें जो कुछ है उसका आनन्द लें।

अब वचन में क्यों डुबकी लगाएँ? हमें वचन में डुबकी लगाने की क्या जरूरत है? दो कारण – क्योंकि पहला – वचन के बिना प्रचारक असहाय है। पतरस, इस विशेष दिन में आप पतरस की जगह लेकर देखें। आपके पास बड़ी आन्धी की आवाजें हैं। आग की सी जीभें उन सब पर उतर रही हैं और उसके सारे मित्र अलग–अलग भाषाओं में बोल रहे हैं और पतरस, दबाव में है। आपको खड़े होकर यह सब समझाना है। इसलिए पतरस खड़ा होता है और वह जानता है कि यहाँ जो कुछ हो रहा है उसके बारे में वचन न जो कुछ कहा है उसके बिना वह असहाय है। वह जानता है कि उसका अधिकार पूरी तरह उसके वचन के ज्ञान और उसकी वचन की व्याख्या पर आधारित है। इस सब में भविष्यद्वाणी की एक झलक है। पतरस जो कह रहा है, वह ठीक वही है जो हम पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में देखते हैं कि पूरे पुराने नियम में जब पवित्र आत्मा लोगों पर उतरता तो वे यहोवा के वचन की घोषणा करने लगते। प्रेरितों के काम 2 में हम ठीक यही होते हुए देख रहे हैं। योएल का उद्धरण देते समय यह भी कहा गया है कि आत्मा तुम्हारे ऊपर आएगा और तुम भविष्यद्वाणी करोगे। यहोवा के वचन को बोलना एक भविष्यद्वक्ता की जिम्मेदारी थी। इससे न चूकें। हमें इसे समझना है। यदि भविष्यद्वक्ता के पास यहोवा का वचन नहीं है तो उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं होगा। मैं चाहता हूँ कि हम आज प्रचार के साथ संबंध को देखें। यदि प्रचारक के पास यहोवा का वचन नहीं है तो उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं है। पुराने नियम में ये भविष्यद्वक्ता खड़े होकर कहते "यहोवा यों कहता है," और वे यहोवा का वचन बताने लगते। आज प्रचारक, उसकी जिम्मेदारी, मेरी जिम्मेदारी है कि आपके सामने आकर कहे "यहोवा यों कहता है" और लोगों तक यहोवा का वचन पहुँचाए। यहाँ हम ठीक यही होते हुए देख रहे हैं।

अब इस बिन्दू पर हमें याद रखना है कि नये नियम और पुराने नियम के प्रचार और आज के प्रचार – नये नियम और पुराने नियम की आराधना में वचन की भूमिका और आज वचन की भूमिका में थोड़ा अन्तर है। उस समय मेरा विचार है इसे तीन विविध प्रकार के सम्प्रेषणों में बाँटा जा सकता था। आपके पास सबसे पहले, ताजा प्रकाशन था जो परमेश्वर से मिला। इसमें से बहुत कुछ हम पवित्रशास्त्र में लिखा हुआ देखते हैं – पहले यह अंकुरित हुआ – परमेश्वर ने इसे अपने लोगों को दिया और लोगों ने इसकी घोषणा की। हम इसे यीशु में भी देखते हैं जब वह कहता है, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ।" वह परमेश्वर का एक नया प्रकाशन देने लगता है। फिर अन्य बिन्दूओं पर पहले से प्राप्त प्रकाशनों के विवरण दिए गए हैं। पतरस

इस समय यही कर रहा है। हमारे पास पुराने नियम का प्रकाशन है – आज उसे समझाने का तरीका यह है। पहले से कही गई बातों के बारे में बात करते हुए आपने यीशु को यह कहते सुना है, "तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था।" फिर लोग उनके आधार पर समझाते हैं। कई बार आपके पास नया प्रकाशन होता है; कई बार आप पहले से कही गई बात को समझाते हैं; और वे लोगों को समझाने के लिए उसका प्रयोग करते हैं। जब हम आज के प्रचार और हमारी आराधना में वचन की भूमिका पर आते हैं तो हमारे पास पहला तत्व नहीं है। हमारे पास केवल विवरण और समझाईश है। हमारे पास नया प्रकाशन नहीं है। इससे मेरा मतलब यह नहीं है कि अब परमेश्वर अपने लोगों से बात नहीं करता है। वह स्पष्टतः अब भी अपने लोगों से बात करता है, परन्तु मेरा मतलब है – परमेश्वर स्वर्ग में बैठा यह विचार नहीं कर रहा है कि मुझे उस पुस्तक में कुछ और बातें जोड़नी चाहिए थीं। डेविड, क्या तुम कोई नया वचन ला सकते हो जो बाइबल से बिल्कुल अलग हो? गलत शिक्षाएँ इसी प्रकार शुरू हुईं क्या नहीं? क्या आज के प्रचार के दौर में ऐसा नहीं लगता कि इसमें कुछ जोड़ने की आवश्यकता है क्योंकि यह पर्याप्त नहीं है। हम वचन से एक नया वचन पाने की खोज में भटकते हैं। मुझे याद है एक बार मैं एक आराधना सभा में बैठा था; उस दिन का प्रचारक अपनी बाइबल लाना भूल गया था। आपको जब प्रचार करना हो तो आप अपनी बाइबल लाना नहीं भूलते हैं, परन्तु वह अपनी बाइबल लाना भूल गया। वह खड़ा हुआ और आधे घण्टे तक, उसके सन्देश का विषय मुख्यतः यह था, आज तुम्हारे लिए परमेश्वर का वचन लाने के लिए मैं जो कर सकता था मैंने किया है। उसने कहा – मैं पैदल चला। हर समय मैं ने इसके बारे में सोचा। मैं ने प्रार्थना की। मैं यह किया और वह किया और बीच–बीच में उसने कुछ मजाकिया कहानियाँ बताई जिस से सब लोग हँसने लगे। फिर अन्त में उसने कहा, परमेश्वर से वचन पाने के लिए मैं जो कुछ कर सकता था मैं ने किया लेकिन मुझे कोई वचन नहीं मिला। और यह कहते हुए उसने समाप्त किया, संभवतः परमेश्वर के पास आज हमारे लिए कोई वचन नहीं है। मैं वहाँ बैठा सोच रहा था, तुम्हारे पास 66 पुस्तकें हैं जिन्हें तुम जानते हो कि वे परमेश्वर का वचन हैं। आप बस खड़े हो जाएँ, और चाहें तो लैव्यवस्था को खोलें, और उसका प्रचार करें और आपके पास परमेश्वर का वचन है। आपको प्रचार की खोज में इधर–उधर भटकने की जरूरत नहीं है। वह आपके पास है। बस उसका प्रचार करें। यही भविष्यद्वक्ता का कार्य है और यदि आपके पास यह नहीं है तो आपके पास उन लोगों से कहने के लिए कुछ नहीं है जिनके सामने आप खड़े होते हैं। वचन के बिना प्रचारक असहाय है।

मैं ईमानदार रहूँगा। यह मुझे मुक्त करता है। मुझे अपने सप्ताह को इस सोच में बिताने की आवश्यकता नहीं है कि मैं आज तुम्हारे सामने कौनसा नया वचन लाऊँ। मैं रसोइया नहीं हूँ। मैं खाना नहीं पकाता हूँ। मैं इसे केवल मेज पर लाता हूँ। यह सही है कि मैं इसे गर्म लाने का प्रयास करता हूँ। मुझे आप तक लाने

के लिए कुछ बनाने की आवश्यकता नहीं है। हमारे पास वचन है और वचन का अधिकार भी है। परन्तु आधुनिक प्रचार में और हमारी आज की आराधना में हमने वचन के अधिकार को पीछे डाल दिया है और उसके स्थान पर हमने प्रचारक के अधिकार और अनुभवों को मुख्य स्थान दिया है। हमने इसे उलट दिया है। परिणामस्वरूप बहुत से प्रचार कहानियों और प्रचारक के अनुभवों से भरे होते हैं। लोग कहते हैं, डेविड तुम किसी ऐसे विषय पर प्रचार नहीं कर सकते जिसका तुमने अनुभव न किया हो। आइए एक पल के लिए हम उसके बारे में सोचें। क्या मुझ से यह अपेक्षा रखी जाती है कि पियक्कड़पन पर प्रचार करने के लिए मैं पियक्कड़पन का अनुभव करूँ? क्या विभिन्न प्रकार के पापों पर प्रचार करने के लिए मुझे उनका अनुभव करना जरूरी है? बिल्कुल नहीं! भाइयो और बहनों, आज आपके सामने खड़े होने का मेरा अधिकार मेरे विचारों या मेरे अनुभव पर आधारित नहीं है। यह परमेश्वर के वचन पर आधारित है। केवल वही एकमात्र अधिकार स्रोत है। उसके बिना प्रचारक को मुँह की खानी पड़ेगी।

मुझे याद है मैं एक बार पूर्वी टेनेसी में प्रचार कर रहा था। मैं पूरे सप्ताह पूरे जमाने की उन अच्छी बेदारी सभाओं में से एक में प्रचार कर रहा था। यह ऐसी जगह थी जहाँ लोग अब भी कभी–कभार भुना माँस लाते थे। मैं हर रात प्रचार कर रहा था परन्तु दिन के समय वे मुझ से चाहते थे कि मैं कुछ विद्यालयों में जाकर बात करूँ और उस रात लोगों को आने के लिए तैयार करूँ। निस्सन्देह, उन्होंने कहा, तुम बाइबल से प्रचार नहीं कर सकते और यीशु का नाम नहीं ले सकते। तुम्हें केवल भाषण देना है। मैं ने वैसा ही किया। और कुछ लोग इसे वास्तव में बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं। कुछ लोग इस तरह वास्तव में एक भीड़ को आकर्षित कर सकते हैं। मैं समझता हूँ कि वह अच्छा है, परन्तु उस सप्ताह मैं ने बहुत जल्दी सीख लिया कि वचन और मसीह के बिना मैं एक बहुत अच्छा वक्ता नहीं हूँ। आप में से कुछ लोग सोच सकते हैं कि वचन के साथ भी मैं एक अच्छा वक्ता नहीं हूँ, परन्तु आपको देखना चाहिए कि वचन के बिना मैं कैसा हूँ। वह इससे भी बदतर है। अपनी सेवकाई की आरम्भिक अवस्था में ही मैं ने महसूस किया और परमेश्वर ने बहुत स्पष्ट रूप से मुझे दिखाना शुरू किया कि उसकी सामर्थ के बिना मैं कुछ नहीं हूँ। कुछ लोग मुझ से पूछते हैं – डेविड, रविवार के लिए सन्देश को तैयार करने में तुम्हें कितना वक्त लगता है? मैं उन्हें बिताए गए घण्टों की संख्या बताता हूँ। कई बार लोग कहते हैं, तुम इतना समय क्यों लगाते हो? रविवार को कलीसिया में आने पर तुम ऐसे ही खड़े होकर पवित्र आत्मा को तुम्हारे द्वारा बात क्यों नहीं करने देते हो? क्यों का जवाब। इसलिए नहीं कि मैं नहीं समझता कि पवित्र आत्मा यह कर सकता है, परन्तु यदि खड़े होकर मुझे यह कहना है "यहोवा यों कहता है" तो मेरे लिए लोगों के सामने आने से पहले यह जानना बेहतर है कि यहोवा क्या कहता है।

वचन के बिना प्रचारक असहाय है। यही नहीं वचन के बिना कलीसिया, इससें न चूकें, कलीसिया भी सामर्थहीन है। यह मुख्य नींव है जिस पर प्रेरितों के काम 2 की कलीसिया निर्मित है। इसीलिए उसके द्वारा कही गई पहली बात है "उन्होंने अपने आप को प्रेरितों की शिक्षा पाने में लौलीन किया।" यदि हमारे पास समय होता तो हम प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक को पढ़ते और वचन की भूमिका और वचन की घोषणा को देखते जो कलीसिया के निर्माण में जारी रहता है। यह कलीसिया में सामर्थ का आधार है। अब हम जानते हैं कि प्रेरितों के काम 2:42–27 में बाइबल कहती है केवल यही नहीं कि उन्होंने अपने आप को इन बातों में लौलीन किया बल्कि सब पर भय छा गया और प्रेरितों के द्वारा बहुत से चिन्ह और चमत्कार होते थे। आपके पास वचन के आगे जाने की तस्वीर है; यह बढ़ रहा है, प्रचार किया जा रहा है। चिन्ह और चमत्कार किए जा रहे हैं जो वचन को प्रमाणित करते हैं और वचन की सामर्थ के बारे में प्रकाशित करते हैं। यह प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में होता है, विशेषतः वचन जब नये स्थानों में जाता है जहाँ यह पहले नहीं पहुँचा है। यह आज सारे संसार में हो रहा है। आप दूसरे देशों में जाएँ, विशेषतः उन देशों में जहाँ वचन की जानकारी नहीं है और आप चमत्कारों को देखेंगे और गवाहियों को सुनेंगे। इन्डोनेशिया में भी जहाँ हम जून में उन कार्यों की कहानियों को सुनने गए थे जो मुसलमानों को मसीह में लाने के लिए परमेश्वर वहाँ कर रहा है। मस्जिद का एक नेता है, जिन्हें इमाम कहते हैं, मस्जिद का यह अगुवा हमेशा की तरह शुक्रवार को मस्जिद में था। वह नमाज पढ़ रहा था और सिर झुका रहा था और अपनी दरी पर वह सिर झुका रहा था। एक बार झुकते समय वह अपनी आँखों को खोलता है और देखता है कि उसकी दरी पर मसीह के चेहरे की तस्वीर है। यदि आप एक मुसलमान हैं और अल्लाह से प्रार्थना कर रहे हैं और नीचे देखने पर आप यीशु का चेहरा देखते हैं जो चेहरे पर मुस्कान के साथ कह रहा है, मैं चाहता हूँ तुम मेरे पास आओ, तो आप एक नजर और देखना चाहेंगे। उसने इस महिला को पाया जिसे वह जानता था कि विश्वासी है और मसीह के विश्वास में आया। आश्चर्यजनक घटनाओं के होने की कहानियाँ – मुझे एक स्वप्न/दर्शन जैसी कहानी याद है जब एक महिला गर्भपात करवाना चाहती थी। इन्डोनेशिया में गर्भपात की दर बहुत ऊँची है। मैं एक महिला से बात कर रहा था जो अविवाहित माताओं के लिए घर चलाती है और गर्भपात की बजाय दूसरे विकल्पों को खोजने में उनकी सहायता करती है। उस महिला ने जो गर्भपात करवाना चाहती थी एक रात सोते समय अपने सपने में एक व्यक्ति को देखा। वह उसे नहीं जानती थी। उसके हाथों में कुछ भेड़ें थीं और उसके चारों ओर मेमने थे और वह उस स्वप्न और दर्शन में उसके पास आया और कहा, मैं नहीं चाहता कि तुम उस बच्चे को मारो जो तुम्हारे अन्दर है। मैं ने उसे किसी कारण से तुम्हारे अन्दर रखा है और वह मेरा है। वह बहुत डर गई और अगली सुबह उसने निर्णय लिया, मैं गर्भपात नहीं करवाऊँगी। वह उस चिकित्सक के पास गई जो इसे करने वाली थी और कहा, मैं यह नहीं करूंगी। चिकित्सक ने कहा, तुम्हें इस घर में जाना चाहिए जहाँ ऐसी माताओं के लिए कुछ सहायता है जो

तुम्हारे जैसी अवस्था में हैं। अतः वह वहाँ जाती है और इस महिला के दफ्तर में आती है। अन्दर आते समय दीवार पर वह यीशु की एक तस्वीर को देखती है। वह यह भी नहीं जानती थी कि उसके दर्शन में कौन आया था। वह ऊपर की ओर नजर उठाकर कहती है, वह व्यक्ति स्वप्न में मेरे पास आया। वह कौन है? वह उसे मसीह के बारे में बताने लगती है। वह महिला और उसके पिता दोनों मसीही बन गए। वह बच्चे को जन्म देती है और वह बच्चा इन्डोनशिया में एक मसीही परिवार द्वारा गोद ले लिया जाता है। परमेश्वर पूरे संसार में अद्भुत काम कर रहा है।

यहाँ एक सवाल है जिस से मैं पिछले 6 माह से जूझ रहा था। सवाल यह है ऐसी बातें हमारे यहाँ क्यों नहीं होती हैं। हम इस प्रकार की कहानियाँ सुनते हैं। हम बर्मिंघम में इस तरह की कहानियाँ क्यों नहीं सुनते हैं? वचन के अध्ययन और लोगों से बातचीत के आधार पर मैं जिन सर्वोत्तम निष्कर्षों पर पहुँचा उनमें दो बातें हैं। पहली यह कि मेरा विचार है कि हम अपने चारों ओर की अलौकिक घटनाओं से अनजान हैं। पुनर्जागरण ने हमें इतना अधिक प्रभावित किया है कि सब कुछ तर्क या तार्किकता के आधार पर समझाया जा रहा है और हम इस तथ्य के प्रति खुले नहीं हैं कि इस संसार में ऐसी अलौकिक घटनाएँ होती हैं जिन्हें हम समझा नहीं सकते हैं। दूसरा कारण, यह प्रेरितों के काम में जो हो रहा है वहाँ आता है, आप देखते हैं, और मैं ने पहले बताया, आप इन चिन्हों और चमत्कारों को उस समय होते देखते हैं जब वचन नई जगहों पर जाता है। संसार में आज आप यही देख रहे हैं, परन्तु बर्मिंघम जैसे स्थानों में जहाँ वचन पहले से ही है वहाँ वचन में निहित सामर्थ के कारण वे आश्चर्यकर्म आवश्यक नहीं हैं। यदि वचन पहले से ही है तो उसे प्रमाणित करने के लिए चिन्हों को जानने की आवश्यकता नहीं है। आपको लूका 16 याद है जब लूका धनी व्यक्ति और लाजर के बारे में बताता है? धनी व्यक्ति नरक में है और वह कहता है कि मेरे भाइयों के पास किसी को भेज कि वह जाकर उन्हें सच्चाई बताए। किसी व्यक्ति को भेज जो उन्हें कोई आश्चर्यकर्म दिखाए। अब्राहम क्या कहता है? वह कहता है, उनके पास व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता हैं। उनके पास वचन है। यदि कोई मुर्दों में से जी उठे तो भी वे विश्वास नहीं करेंगे। मुझे निश्चय है कि आज बर्मिंघम में अद्भुत बातें होते देखने के लिए हमारे पास वचन में निहित सामर्थ है। सवाल यह है क्या हम ऐसी कलीसिया बनेंगे जो परमेश्वर के वचन को पूरी तरह माने; जो उसके वचन को सुने; उसके वचन का अध्ययन करे और वचन के अधिकार पर निर्भर हो? वचन के अधिकार के कारण हमें अपनी आराधना में वचन को मुख्य स्थान देना है।

हमारी आराधना में वचन को मुख्य स्थान देने का तीसरा कारण – वचन की प्रासंगिकता के कारण। मैं चाहता हूँ आप देखें प्रेरितों के काम 2 में क्या हुआ। पद 12 और 13 में प्रचार किस प्रकार का है। वहाँ जो हो रहा है उसे देखकर लोगः

12चकित हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, "यह क्या हो रहा है?"
13परन्तु दूसरों ने ठट्ठा करके कहा, "वे तो नई मदिरा के नशे में चूर हैं।"
14तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगाः

लोग पूछ रहे हैं, यह क्या हो रहा है? उस दिन कुछ ऐसा हुआ जिसे समझाना आवश्यक है। इसलिए पतरस पुराने नियम से वचन लेता है और उसे वर्तमान पर लागू करना शुरू करता है। मैं चाहता हूँ आप यहाँ वचन की दो विशेषताओं को देखें। पहली – वचन आज की आवश्यकताओं के बारे में बात करता है। प्रेरितों के काम दो में यह वर्तमान परिस्थिति को संबोधित करता है परन्तु इससे न चूकें। पतरस वर्तमान परिस्थिति को उन पुस्तकों के द्वारा संबोधित कर रहा है जो सैंकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई थीं। अतः वचन वर्तमान आवश्यकताओं में बात करता है परन्तु इसे सुनें – वचन अनन्तकालीन वायदों के बारे में बात करता है। आपके पास सर्वकालिक वचन है जिसे पतरस तत्कालीन सन्दर्भ में लागू कर रहा है। भविष्यद्वक्ता या प्रचारक भी यही करते हैं। वे एक प्रकार के पुल हैं जो बीच की खाई को पाटते हैं... इन वचनों को अब से हजारों वर्ष पूर्व लिखा गया – ये हमारे वर्तमान सन्दर्भ में किस प्रकार लागू होते हैं? बाइबल सर्वकालिक है और न केवल प्रेरितों के काम 2 में बात करने के लिए बल्कि आज हमारे अध्ययन और 21वीं सदी में यह देखने के लिए भी पर्याप्त रूप से प्रासंगिक है कि यह हमारे जीवनों में किस तरह लागू होती है। वचन वर्तमान आवश्यकताओं से बात करता है। वचन अनन्तकालीन वायदों के बारे में बात करता है।

अब हम ईमानदार रहें। इस बिन्दू पर हम सोचते हैं और कुछ लोग कहना चाहते हैं परन्तु कहने से डरते हैं– मैं नहीं समझ सकता कि हम बाइबल क्यों पढ़ते हैं क्योंकि यह बहुत प्राचीन है। यह वास्तव में उन दबावों के बारे में कुछ नहीं कहती है जिनका हम 21वीं सदी में सामना करते हैं। आप में से कुछ लोग सोच रहे हैं कि मैं ने इसे समझ लिया है, मेरे जीवन में इस समय ये सब हो रहा है। मेरे जीवन में इस समय ये सब हो रहा है और तुम आज यहाँ आकर इस बारे में बात करने वाले हो कि 2000 साल पहले क्या हुआ। मुझे यबूसियों और अमोरियों के बारे में बताओ। उनका मुझ से क्या संबंध है? क्या बाइबल वास्तव में सुनने लायक है जब बात 21वीं सदी की हो और उन सब दबावों और चिन्ताओं, कठिनाईयों, परीक्षाओं, और निर्णयों की हो जो हमें लेने हैं? क्या हमें बाइबल की सुननी भी चाहिए? इस बिन्दू पर मैं

चाहता हूँ कि हम एक डुबकी लें और एक पल के लिए उन अनन्त वायदों के बारे में सोचें जो वर्तमान आवश्यकताओं से बात करते हैं। मेरे पास एक सूची है। मैं चाहता हूँ आप याद रखें यहोशू 1:8–9 कहता है:

8व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

यह भौतिक सम्पन्नता या भौतिक सफलता नहीं है। हम अमरीकी न बनें जो सफलता और सम्पन्नता को केवल भौतिक आँखों से देखते हैं। यह आपके जीवन और आपके परिवार में सफलता और सम्पन्नता की बात करता है चाहे इसका अर्थ कठिनाई ही क्यों न हो। वचन सम्पन्नता और सफलता लाता है। भजन 19 कहता है वचन हमारे प्राण को बदलता है, हमें बुद्धिमान बनाता है, हमारे मनों में आनन्द देता है। यह हमारे मन को आनन्दित करता है। यह साधारण को बुद्धिमान बनाता है; हमारी आँखों को खोलता है। भजन 19 आगे कहता है यह सदा काल के लिए है। यह सत्य है। यह धर्मी है, अनमोल है, और स्वादिष्ट है। भजन 119:105 कहता है परमेश्वर का वचन भविष्य के लिए मार्गदर्शन और दिशा प्रदान करता है। तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है। आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर के उद्देश्य को जानना चाहते हैं? वचन के पास जाएँ। यह आपके जीवन के लिए मार्गदर्शन और दिशा प्रदान करता है। यशायाह 40:1–11 परेशानियों के समय सांत्वना और हमारी ताकत के बारे में बात करता है। "मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति" के साथ यशायाह 40 शुरू होता है। अन्त में यह कहता है:

> *तू उकाबों के समान उड़ेगा। तू दौड़ेगा और श्रमित न होगा, चलेगा और थकित न होगा।*

परेशानियों में हमारी शान्ति और ताकत। यूहन्ना 1:1–14 हमें बताता है कि बाइबल, परमेश्वर का वचन, स्वयं यीशु को प्रकट करता है। यूहन्ना 17:17 कहता है कि यह सच्चाई और पवित्रता का स्रोत है। फिलिप्पियों 4:4–7 कहता है यह हमें शान्ति देता है:

> *6किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।*
> *7तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।*

2 तिमुथियुस 3:14–17 बताता है कि वचन किस प्रकार हमें उद्धार, उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए बुद्धि देता है। यह हमें परिपक्व बनाता है और परमेश्वर की सेवा के लिए तैयार करता है। 1 पतरस 2:2 कहता है वचन हमें आत्मिक रूप से बढ़ाता है।

क्या बाइबल प्रासंगिक है? संभव होता तो मैं उस सूची में कुछ जोड़ना चाहता था। क्या बाइबल प्रासंगिक है? जब हम अपने आप को अकेला और त्यागा हुआ महसूस करते हैं और यहोशू 1:5 में वचन हमसे कहता है:

> *"मैं तुझे न तो कभी छोड़ूँगा और न कभी त्यागूँगा। मैं सदा तेरे संग रहूँगा।"*

जब हम अपने परिवार में या नौकरी में किसी निर्णय के बारे में असमंजस में होते हैं तो नीतिवचन 3 में वचन हम से कहता है:

> *"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"*

जब ऐसा लगता है कि संसार हमें घेर रहा है, तो सपन्याह 3:17 में यहोवा कहता है:

> *"मैं अपने प्रेम से तुझे चुप करूंगा और मैं ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होऊँगा।"*

एक अध्याय क्या कहता है – रोमियों 8. जब हम पाप से जूझते हैं तो बाइबल हमसे वायदा करती है कि

> *"1अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।"*

जब आप भविष्य के बारे में अनिश्चित और डरे हुए हों तो रोमियों 8 कहता है:

> *"15क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। 16आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ*

गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं; 17और यदि सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुःख उठाएँ तो उसके साथ महिमा भी पाएँ।"

जब सब कुछ जैसे होना चाहिए वैसे नहीं हो रहा हो तो रोमियों 8:28 हमारे मन में आता है और कहता है

"जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"

जब हम अपनी सहनशक्ति के बाहर की परखों का सामना करते हैं तो रोमियों 8 कहता है:

"31...यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? 32जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?"

जब पति या पत्नी घर छोड़ दे या मम्मी या डैडी घर छोड़ दे तो परमेश्वर हमारे दिलों में कहता है:

"38... न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, 39न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकेगी।"

जब हम भयभीत हों और नहीं जानते कि भविष्य में क्या होगा तो परमेश्वर यशायाह 43 में कहता है:

"1... मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है;
मैं ने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है।
2जब तू जल में होकर जाए,
मैं तेरे संग संग रहूँगा;
और जब तू नदियों में होकर चले,
तब वे तुझे न डुबा सकेंगी
जब तू आग में चले,

तब तुझे आँच न लगेगी;
और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।
3क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ,
इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ;...
4मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है
और मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ,

बहनों और भाइयो, मरकुस 13:31 कहता है:

31आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।

आप देखते हैं कि सवाल हम बाइबल की क्यों सुनें, की बजाय यह बन जाता है कि हम किसी और की क्यों सुनें? हम अपनी आराधना को वचन की जगह किसी और से क्यों भरें? एक प्रचारक का काम बाइबल को प्रासंगिक बनाना नहीं है। बाइबल प्रासंगिक है। प्रचारक का काम बाइबल की प्रासंगिकता को दिखाना है, कि यह वर्तमान आवश्यकताओं के बारे में, अनन्त वायदों के बारे में बात करती है।

चौथी विशेषता – वचन की विशालता, इसके अधिकार और इसकी प्रासंगिकता के कारण – चौथा वचन के उद्देश्य के कारण। अब यहाँ मैं आप से चाहता हूँ कि आप पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के कार्यक्रम में गहरी डुबकी लगाएँ। हमने कलीसिया में कई बार कार्यक्रमों की बात की है। मैं चाहता हूँ कि हम पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के कार्यक्रम को देखें। पहला – पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का कार्यक्रम हमें मसीह की महिमा दिखाना है। हमने पिछले सप्ताह बात की कि किस प्रकार पतरस का प्रचार पूरी तरह परमेश्वर–केन्द्रित था। उस प्रचार का केन्द्र बिन्दू मसीह का व्यक्तित्व है। 22–24 पदों को देखने पर आप पायेंगे कि यहाँ पर मुख्यतः मसीह की तीन विशेषताओं पर बल दिया गया है। सबसे पहले मसीह परमेश्वर द्वारा प्रमाणित मनुष्य है। "हे इस्राएलियो, ये बातें सुनोः यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण सामर्थ के काम थे।" दूसरा – वह परमेश्वर द्वारा भेजा गया उद्धारकर्ता था। पद 23 में देखें। उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। यह परमेश्वर की योजना थी कि हमें हमारे पापों से बचाने के लिए उसका पुत्र मरे।

अन्ततः वह परमेश्वर द्वारा महिमा प्राप्त प्रभु है। पद 24 में परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाया, उसे मृत्यु के बन्धनों से आजाद किया क्योंकि यह अनहोना था कि वह मृत्यु के वश में रहता। अतः सम्पूर्ण उद्देश्य यह है कि बाइबल हमें मसीह की महिमा दिखाती है। पतरस मसीह की महिमा दिखाने के लिए पुराने नियम का प्रयोग कर रहा है। कुछ महिनों बाद नवम्बर में हम पुराने नियम को देखेंगे ओर उसका रूचिकर भाग यह देखना होगा कि कैसे मसीह पुराने नियम के प्रत्येक पृष्ठ में है; कैसे उसकी उपस्थिति सारे पवित्रशास्त्र में फैली है। वह सारी बातों का मुख्य केन्द्र है।

बाइबल का उद्देश्य है हमें मसीह की महिमा दिखाना, और दूसरा हमें मसीह के स्वरूप में बदलना। यहाँ मैं चाहता हूँ कि आप पृष्ठों को थोड़ा पलटें। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ उत्पत्ति 1 में आएँ। साथही, एक अँगुली उत्पत्ति एक में रखें, और दूसरे हाथ से प्रकाशितवाक्य 21 में आएँ। यहाँ पर हम थोड़े मजे करेंगे, ठीक? हम थोड़ा आगे पीछे जायेंगे। एक हाथ में उत्पत्ति 1 और प्रकाशितवाक्य 21 पर जाने के लिए तैयार रहें। मैं चाहता हूँ कि आप ऐसी बातों को देखें जो हमें बाइबल का उद्देश्य दिखाती हैं। उत्पत्ति 1:1 स्पष्टतः कहता हैः

> *1आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।*

अतः शुरूआत से ही परमेश्वर सृष्टि के द्वारा अपनी महिमा को प्रकट कर रहा है परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ उत्पत्ति 1:26–27 को विशेष रूप से देखें। देखें वहाँ बाइबल क्या कहती है; बाइबल की पहली पुस्तक; उत्पत्ति 1:26–27 कहता हैः

> *26फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ,* और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"
> *27तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया,*
> *अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया;*
> *नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।*

बाइबल की शुरूआत में हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने स्वरूप में मनुष्य की सृष्टि करता है। हमें परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया गया था। लेकिन फिर हम उत्पत्ति 3 में आते हैं और पाप का प्रवेश होता है। मैं

चाहता हूँ आप उत्पत्ति 3:22 को देखें। आदम और हव्वा, मनुष्य पाप के प्रभावों को अनुभव करता है। पद 22 कहता हैः

> *22फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया हैः इसलिए अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।" 23इसलिए यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था।*

यहाँ पर हम पाप के कारण मनुष्य में परमेश्वर के स्वरूप के दूषित होने की तस्वीर को देखते हैं। इस प्रकार बाइबल की शुरूआत होती है, परिचय। अब यहाँ पर हाथ रखें और प्रकाशितवाक्य 21:1 में जाएँ। बाइबल कहती हैः

> *1फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।*

प्रकाशितवाक्य 21 में पृथ्वी की पुनः स्थापना, पुनर्सृष्टि जैसी उत्पत्ति 1 और 2 में इसकी इच्छा की गई थी। उत्पत्ति 3 में हम मनुष्य के गिरने से पाप के कारण परमेश्वर के स्वरूप को दूषित होते देखते हैं। मैं चाहता हूँ आप प्रकाशितवाक्य 22 को देखें। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ पद 1 और 2 को देखें। यह स्वर्ग के बारे में बात करता है और यह कहता हैः

> *1फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलकर 2उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था, और उस वृक्ष के पत्तों से जाति–जाति के लोग चंगे होते थे। 3फिर स्राप न होगा।*

मैं चाहता हूँ आप इसे ध्यान में रखें। मेरे साथ उत्पत्ति 3 में लौटें और पद 24 को देखें, वह पद जिसे हमने इस अध्याय के अन्त में नहीं पढ़ा। देखें यह क्या कहता हैः

24इसलिए आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिए अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।

उत्पत्ति 3 में जीवन के वृक्ष के पास से निकाल दिया गया; प्रकाशितवाक्य 22, जीवन का वृक्ष अब जाति–जाति के लोगों को चंगाई दे रहा है क्योंकि अब परमेश्वर के लोगों के लिए कोई स्राप नहीं है। शुरूआत में यह स्राप पाप के परिणामस्वरूप था। परन्तु अन्त में, अब कोई स्राप नहीं है और बीच में परमेश्वर अपने लोगों को पुनः अपने स्वरूप में उत्पन्न करता है। ये बाइबल के सिरे हैं और पवित्रशास्त्र के शेष पृष्ठ मुख्यतः हमें, मुझे और आपको, अपने स्वरूप में पुनः रचने की एक बड़ी कहानी हैं। सम्पूर्ण पुराने नियम में हम देखते हैं कि कैसे वह चाहता है कि उसका स्वरूप उसके लोगों के द्वारा प्रतिबिम्बित हो इसलिए भजन 17:15 कहता है हमारी सन्तुष्टि इसमें है कि लोग हम में परमेश्वर की समानता को देखें और जानें। फिर हम नये नियम में आते हैं और इसे अधिक स्पष्ट होते हुए देखते हैं।

हम एक यात्रा पर चलें। रोमियों 8 में जाएँ। मैं चाहता हूँ आप उस पद को देखें जिसे मैं ने अभी उद्धृत किया। मैं चाहता हूँ कि आप अपनी बाइबल में उन स्थानों को रेखांकित करें जहाँ परमेश्वर इस बारे में बात करता है कि कैसे उसने हमें अपने स्वरूप में उत्पन्न किया। रोमियों 8:28 देखें। यह कहता हैः

28हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

सुनें पद 29 क्या कहता हैः

29क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। 30फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।

अतः पवित्रशास्त्र के अनुसार शुरूआत से ही परमेश्वर ने हमारे लिए यह ठहराया है कि हम यीशु के समान दिखें, मसीह के स्वरूप में बदलते जाएँ। दाईं ओर की दो पुस्तको को पलटकर 2 कुरिन्थियों 3 पर आएँ।

हम बाइबल के उद्देश्य को देख रहे हैं। 2 कुरिन्थियों 3:18. यह एक मुख्य पद है। सुनें यह किस प्रकार रोमियों 8:29 के समान है। यह कहता है:

> *18परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।*

हम उसकी समानता में बदल रहे हैं कि हम उसकी महिमा को प्रकट करें। हमेशा बढ़ने वाली महिमा के साथ हम दिन–प्रतिदिन मसीह के समान बनते जाते हैं। फिलिप्पियों 3 पर आएँ। फिलिप्पियों 3:20–21 को देखें। आप इसे रेखांकित कर सकते हैं। यह हमें बाइबल में परमेश्वर के उद्देश्य को दिखाता है।

> *20पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। 21वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन–हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।*

हम आगे बढ़ सकते हैं। कुलुस्सियों 3:10 बताता है हम किस प्रकार दिन–प्रतिदिन मसीह के स्वरूप, नये मनुष्य को पहन रहे हैं। 2 पतरस 1:3–4 बताता है कि हम कैसे परमेश्वर के स्परूप में बढ़ रहे हैं। 1 यूहन्ना 3:2 कहता है कि एक दिन हम उसके समान बन जायेंगे। उसकी उपस्थिति में हम रूपान्तरित हो जायेंगे। यही बाइबल का सम्पूर्ण कार्यक्रम, सम्पूर्ण उद्देश्य है। इससे न चूकें। यह हमें मसीह की महिमा दिखाना और हमें मसीह के स्वरूप में लाना, रूपान्तरित करना है।

अब इस बिन्दू पर मैं चाहता हूँ कि हम अपने वर्तमान सन्दर्भ में थोड़ी गहरी डुबकी लगाएँ कि आराधना में वचन महत्वपूर्ण क्यों होना चाहिए। वचन का उद्देश्य है हमें मसीह को दिखाना और हमें मसीह के समान बनाना। हमने इसे समझ लिया है। ठीक? अब यदि यह वचन का उद्देश्य है तो मैं चाहता हूँ हम सोचें कि वचन का उद्देश्य क्या नहीं है। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ रहें क्योंकि मेरी बात को सुनकर कुछ लोग कह और सोच सकते हैं कि मैं एक झूठा शिक्षक हूँ, परन्तु मैं ऐसा नहीं सोचता। और मैं नहीं चाहता कि आप भी मेरे बारे में ऐसा सोचें। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मेरे निकट रहें। यदि वचन का उद्देश्य हमें मसीह के स्वरूप में बदलना है तो इसका अर्थ है कि हमारे जीवन के प्रत्येक सवाल का उत्तर देना या हमारे जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में हमें दिशा दिखाना वचन का उद्देश्य नहीं है। ऐसे बहुत से सवाल हैं

जिनका बाइबल उत्तर नहीं देती है। हम ऐसे बहुत से सवालों के बारे में सोच सकते हैं। बाइबल डायनोसोर के बारे में क्या कहती है? बाइबल में डायनोसोर के बारे में ज्यादा कुछ नहीं है। हर बच्चा पूछता है परमेश्वर डायनोसोर के बारे में क्या कहता है? मैं नहीं जानता। थोड़ा और गहरे जाएँ और हमारे जीवन की घटनाओं को देखें। बाइबल किशोरों के लालन–पालन के बारे में क्या कहती है? क्या बाइबल किशोरों के लालन–पालन की एक विशेष पुस्तक है? हाँ कुछ सिद्धान्त हैं जो इस पर आधारित हैं परन्तु यह पुस्तक यह बताने के लिए नहीं लिखी गई कि किशोरों को कैसे पाला जाए। बाइबल इस सवाल का जवाब नहीं देती है कि तलाक से कैसे उबरा जाए। तलाक से उबरने की प्रक्रिया, दुःख से उबरने की प्रक्रिया के बारे में बाइबल क्या कहती है? यह उसके तरीकों को बताने वाली पुस्तक नहीं है। हमारे धन के प्रबन्ध के बारे में बाइबल क्या कहती है? कलीसियाओं में दो सबसे बड़ी आवश्यकताएँ – मैं अपने विवाह को कैसे संभालूँ, और मैं अपने धन को कैसे संभालूँ। बाइबल क्या कहती है, व्यवहारिक सलाह? क्या इस बारे में कोई विशेष सलाह दी गई है कि धन का निवेश कैसे किया जाए, सामाजिक सुरक्षा से कैसे निपटा जाए या आपके निवेशों या शेयरों या व्यापार को कैसे संभाला जाए? बाइबल इस बारे में विशेष दिशा–निर्देश नहीं देती है। फिर सामाजिक सवाल भी हैं। बाइबल क्लोनिंग के बारे में क्या कहती है? अब स्पष्टतः, मुझे गलत न समझें, पवित्रशास्त्र में इन बातों के लिए कुछ आधारभूत सिद्धान्त हैं। परन्तु बाइबल इन सवालों का जवाब देने के लिए नहीं लिखी गई थी कि हम अपने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का सामना कैसे करें और हमारे जीवन के प्रत्येक सवाल का जवाब दे। इसके प्रकाश में, हमें अपने आप से यह पूछना है कि यदि यह बाइबल का उद्देश्य नहीं है और प्रचारक उन मुद्दों को संबोधित करना चाहता है जो लोगों के जीवन की सच्चाईयाँ हैं; यदि मैं तलाक से उबरने या किशोरों को पालने या धन के प्रबंध के बारे में बोलना चाहूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि ये आवश्यकताएँ यहाँ हैं और बाइबल उनके बारे में गहराई से नहीं बताती है; निश्चित रूप से कुछ बातें बहुत गहराई से कही गई हैं; और यदि मैं उनके बारे में प्रचार करना चाहूँ तो मेरे पास मूलतः दो विकल्प हैं। पहला, मैं वचन को तोड़–मरोड़कर ऐसी बातें कह सकता हूँ जो वचन नहीं कहता है और इस बारे में प्रचार कर सकता हूँ कि कैसे अपने धन का बुद्धिमानी से प्रबन्ध करें और अपने किशोरों को बुद्धिमानी से कैसे पालें या यदि यह कामयाब नहीं होता है तो मैं किसी मसीही पुस्तक की दुकान में जाकर किशोरों के लालन–पालन पर कोई नई पुस्तक खरीदकर बाइबल की बजाय उस पर प्रचार कर सकता हूँ जैसा कि आजकल कलीसिया में हर जगह हो रहा है। हमें अपने आप से यह पूछना है, क्या हमारी आराधना का केन्द्र अच्छी बातें हैं या परमेश्वर की बातें हैं? मैं इसे स्पष्ट करूंगा। अच्छी बातें – मैं उन बातों के बारे में कह रहा हूँ जिनका मैं ने अभी वर्णन किया हैः किशोरों को कैसे पाला जाए, तलाक से कैसे उबरा जाए, दुःख से कैसे निपटा जाए, अपने धन का प्रबन्ध कैसे किया जाए। अच्छी बातें, अच्छी बातें जो हम सब के जीवन में महत्वपूर्ण हैं। मैं इसके महत्व का इनकार नहीं कर रहा हूँ। यह निश्चित रूप से

महत्वपूर्ण है। परमेश्वर की बात वह सत्य है जो पवित्रशास्त्र में प्रकट है कि हम में मसीह का स्वरूप उत्पन्न करे। प्रश्न जो हमें पूछना है, अपनी आराधना में हम अच्छी बातों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे या परमेश्वर की बातों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे? अब मेरे साथ चलें। हमारी आराधना में, यदि हम अच्छी बातों पर ध्यान केन्द्रित करें और परमेश्वर की बात को अनदेखा करते हैं तो हम अपने आप को उस सत्य से वंचित करते हैं जो हमारे जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक है। यह इसके बारे में नहीं है कि हमें क्या नहीं मिलेगा। हमें रविवार सुबह हमें अच्छी सूचना मिलती है। यदि नहीं मिलता है तो वह सत्य जिसकी मसीह के स्वभाव में बढ़ने के लिए हमें जरूरत है। हमें प्रचारक से व्यवहारिक सलाह और बुद्धि प्राप्त होती है परन्तु हमें वचन नहीं मिलता है जो हमारी आत्माओं को तृप्त करके हम में मसीह का स्वरूप उत्पन्न करता है। हम अपने आप को उस सत्य से वंचित कर देते हैं जो हमारे जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक है और दूसरा हम परमेश्वर से उसके बड़े नाम की महिमा को चुरा लेते हैं। हम एक ऐसी कलीसिया संस्कृति को बना लेते हैं जहाँ सारे उत्तरों के लिए हर कोई प्रचारक पर निर्भर है और इस बात या उस बात के लिए प्रचारक की बुद्धि या उसकी सलाह पर निर्भर हैं। बहनों और भाइयो, क्या मैं आपके सामने सच्चाई बता सकता हूँ? मैं इतना अच्छा नहीं हूँ। मेरे पास उन सब परिस्थितियों का उत्तर नहीं है जिनका हम सामना करते हैं। मेरे पास पर्याप्त अच्छी आर्थिक सलाह नहीं है कि मैं आप सबको सलाह दे सकूँ कि आपको अपने निवेशों के साथ क्या करना चाहिए। मेरे पास इस बात के लिए सारे उत्तर नहीं हैं कि आपके किशोरों को कैसे पाला जाए। यह केवल इस कारण नहीं है कि मेरे कोई किशोर सन्तान नहीं है। यदि होते भी, तो मेरा सोचना है कि किशोरों के अलग–अलग परिदृश्य होते हैं; और बच्चों के व्यक्तित्व भी अलग–अलग होते हैं। उसके लिए कोई एक उत्तर नहीं है। अतः हमने एक ऐसी कलीसियाई संस्कृति बना ली है जहाँ प्रचारक से अपेक्षा की जाती है कि हर सप्ताह वह इस सवाल या उस सवाल का जवाब दे जिसका लोग सामना कर रहे हैं। हम प्रचारक पर ध्यान केन्द्रित करने लगते हैं। हम अपने आप को उस सत्य से वंचित कर देते हैं जो हमारे जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक है और दूसरा हम परमेश्वर से उसके बड़े नाम की महिमा को चुरा लेते हैं।

मैं आपके साथ वाल्टर कैसर नामक एक व्यक्ति के उद्धरण को बाँटना चाहता हूँ। उसने कहाः

"बहुत से पासबान धर्मशास्त्रीय संदर्भ के किसी ऐसे वाक्यांश या वाक्य के छोटे से हिस्से से पूरे सन्देश का प्रचार कर सकते हैं जिन्हें बहुत कम लोग पहचानते हैं। और भी अधिक पासबानों ने निर्णय लिया है कि विभिन्न पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बाइबल का प्रयोग करना विकलांगता है। इसलिए वे अपने प्रचारों को मनोविज्ञान और परेशानियों से उबरने से संबंधित उन अनगिनत पुस्तकों से तैयार करते

हैं जो हमारी मसीही पुस्तकों की दुकानों में भरी पड़ी हैं। बाजार की शक्तियाँ माँग करती हैं कि यदि हम चाहते हैं कि लोग आएँ और उन विशाल गिरजाघरों के लिए धन दें जो हमने बनाए हैं, तो उन्हें वह दें जो वे सुनना चाहते हैं।"

मैं नहीं चाहता कि हम सत्य से वंचित हों या हमारा परमेश्वर उस महिमा से वंचित हो जो उसके नाम को मिलनी चाहिए। जब हम अच्छी बातों की बजाय परमेश्वर की बात पर ध्यान देते हैं तो हम अपने आप को उस सत्य से परिपूर्ण करते हैं जो परमेश्वर के उद्देश्य को हमारे जीवनों में पूरा करने के लिए आवश्यक है और हम परमेश्वर को महिमा देते हैं, इसे समझें, हम मसीह के समान बनने के द्वारा परमेश्वर को महिमा देते हैं। ऐसा नहीं है कि ये सारे मुद्दे चाहे वह धन का प्रबंध हो या बच्चों को पालना या तलाक से उबरना; ये सब अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, अत्यधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं; परन्तु वचन को तोड़–मरोड़कर या अन्य मसीही पुस्तकों में से प्रचार करके हर सप्ताह मेरे द्वारा उत्तर उपलब्ध करवाने का प्रयास करने की बजाय, यदि हम वचन पर चलते हैं और मसीह का स्वभाव हम में भरा जाता है और हम अपने जीवन में पवित्र आत्मा के सामर्थ के संपर्क में आते हैं और हम पवित्र आत्मा के साथ चलने लगते हैं तो हम पायेंगे कि उसके पास सारे उत्तर हैं। वह आपको आपके किशोरों का पालन–पोषण करते समय मसीह के पीछे चलने के लिए तैयार करेगा। वह आपको तलाक के सदमे से उबरने की सामर्थ देने के योग्य है। जब आप दुःख से गुजरते हैं, जब आप कैंसर से जूझते हैं, और जब आप उन परीक्षाओं से गुजरते हैं जिनका हमें सामना करना पड़ सकता है, तब उस समय वह आपका मार्गदर्शन करने और अपने अनुग्रह के द्वारा आपको स्थिर रखने के योग्य है। यह मसीह का स्वभाव है और पवित्र आत्मा के सम्पर्क में रहना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह हर सप्ताह परमेश्वर की बातों से तृप्त होने के द्वारा होता है।

मुझे याद है कुछ वर्षों पूर्व मेरे पिताजी का देहान्त होने पर मैं उस दुःख की प्रक्रिया से होकर गुजरने लगा। मुझे याद है कि कलीसिया के लोगों ने मुझे दुःख से उबरने के तरीकों के सन्देश भेजे। यह इस प्रकार हैः तुम्हें ये सब बातें करनी हैं और सब कुछ ठीक हो जाएगा। वह सर्वाधिक फायदेमन्द सलाह नहीं थी। उन दिनों में मेरे लिए सर्वाधिक फायदेमन्द लोग वे थे जिन्होंने उस दिन से पहले बार–बार मुझे बताया कि परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है और परमेश्वर विश्वासयोग्य है और परमेश्वर अपने अनुग्रह और अपनी करूणा से स्थिर रखता है और परमेश्वर अपने धर्ममय दाहिने हाथ से तुम्हें थामे हुए है, और परमेश्वर ने मृत्यु और पाप और कब्र को जीत लिया है इस कारण तुम्हारे पिता को इस बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं थी कि उनके अन्तिम साँस लेने के बाद क्या होगा क्योंकि वे स्वर्ग की ओर जा रहे थे। उन वायदों ने प्रकट किया कि मेरे इन सब बातों में से होकर गुजरने के समय सबसे महत्वपूर्ण बात

परमेश्वर, परमेश्वर का स्वभाव था। हमारी आराधना में हम अच्छी बातों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे या परमेश्वर की बातों पर?

इसीलिए हम इस कलीसिया में कहते हैं कि हमारा उद्देश्य मसीह के समान बनना और सारी जातियों में मसीह के स्वरूप में चेलों को बनाना है। यदि किसी का उद्देश्य इस से अलग है तो आपका यहाँ सदस्य के रूप में स्वागत नहीं है क्योंकि हमारा उद्देश्य मसीह के स्वरूप में बढ़ना है। यह वचन में हमारे समय के द्वारा होता है। यही वचन का उद्देश्य है।

मैं चाहता हूँ कि हम यहाँ रूकें। मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आज आपके जीवन में मसीह का स्वरूप कैसे प्रतिबिम्बित हो रहा है। क्या मसीह का स्वभाव आप में विकसित हो रहा है? मैं कभी नहीं चाहता कि हम कोई ऐसा परिदृश्य बनाएँ कि हम हर सप्ताह कलीसिया में आएँ और भावनाओं को महसूस करें लेकिन आज हम पिछले सप्ताह या दो सप्ताह पूर्व के समय की तुलना में ज्यादा मसीह के समान नहीं दिखते हैं। मैं आपको इस बारे में सोचने का कुछ समय देना चाहता हूँ कि आप में मसीह का स्वभाव कैसे विकसित हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि हम अपना ध्यान प्रार्थना में मसीह पर लगाएँ। मैं आपको निमन्त्रण देता हूँ कि आप अपनी नजरें मसीह पर लगाएँ। मैं चाहता हूँ कि आज आप अपने आप से एक सवाल पूछें। क्या आप अपने जीवन में हर दिन मसीह के स्वरूप में बढ़ रहे हैं? यह वचन का उद्देश्य है। यह हमारे जीवनों में परमेश्वर का उद्देश्य है। मैं आपको परमेश्वर के उद्देश्य में शामिल होने का निमन्त्रण देना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि यहाँ बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्होंने कभी आप में रहने वाली मसीह की वास्तविकता को अनुभव नहीं किया है। आपने अपने जीवन के द्वारा मसीह को महिमा देने की प्रक्रिया को कभी शुरू ही नहीं किया। वह आपको आपके पापों से बचाने के लिए क्रूस पर मरा और वह कब्र में से जी उठा। मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि आप परमेश्वर के वचन का प्रत्युत्तर दें।